5 पठन कौशल
(Reading Skill)

पठन की कार्यविधि
(MECHANICS OF READING)

डिसेन्ट के अनुसार–"पठन लेखन द्वारा उद्दिष्ट सुलिखित/सुवर्णित प्रतीकों को किसी के अनुभव की विधि से उनको सम्बन्धित करके सार्थकता देने की प्रक्रिया है।"

पठन में पाठक दूसरे व्यक्ति के लिखित भावों एवं विचारों को परिस्थिति एवं प्रसंग से अनुरूप ग्रहण करता है। इस प्रकार लिखित संकेतों या वर्णों का उनसे सम्बद्ध ध्वनियों के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए अर्थ ग्रहण की प्रक्रिया पठन कहलाती है।

शिक्षा के क्षेत्र में पठन सीखने का एक महत्वपूर्ण कौशल है। इससे छात्रों को लिखित विचारों एवं तथ्यों को समझने में सरलता होती है और अर्थग्रहण की योग्यता विकसित होती है। अर्थ को समझने की योग्यता के बिना लिखित अथवा मुद्रित पृष्ठों को पढ़कर समझ पाना सम्भव नहीं है। साहित्य के अमृत रस का पान केवल वही पाठक कर सकता है जो मुद्रित पृष्ठों को पढ़कर अर्थग्रहण की सामर्थ्य रखता है। इसलिए भाषा शिक्षण में पठन का विशेष महत्व है।

क्रिया के आधार पर पठन के दो प्रकार होते हैं–

(1) मौखिक पठन।

(2) मौन पठन।

मौखिक पठन–जब लिखित भाषा में व्यक्त भावों एवं विचारों को समझने के लिए ध्वन्यात्मक उच्चारण करके पढ़ते हैं तो वह मौखिक पठन कहलाता है। इसे सस्वर पठन भी कहते हैं। मौखिक पठन के अर्थ को शिक्षा शब्दकोष में स्पष्ट करते हुए लिखा है–

"मौखिक पठन उच्च स्तर में पठन की क्रिया है।"

महत्त्व–भाषा शिक्षण में प्रारम्भिक स्तर पर मौखिक पठन का विशेष महत्व है। इससे पढ़ने में बालकों की झिझक दूर हो जाती है। छात्रों का शब्दोच्चारण शुद्ध होता है। पठन के समय वे शब्दों को देखते हैं जिससे उनका अक्षर विन्यास शुद्ध होता है और शब्द भण्डार में वृद्धि होती है। इसमें बालकों की दृश्येन्द्रियों, ध्वनि यंत्र एवं मस्तिष्क तीनों प्रशिक्षित होते हैं। इसके अभ्यास से बालक वाद-विवाद एवं भाषण कला में निपुण हो जाते हैं।

Scanned with CamScanner

उद्देश्य—(1) छात्रों को शुद्धोच्चारण करने में योग्य बनाना।

(2) छात्रों को उचित लय, स्वर, यति से पठन की योग्यता प्रदान करना।

(3) छात्रों को ध्वनियों के उचित आरोह, अवरोह तथा विराम चिह्नों को ध्यान में रखकर पठन में निपुण बनाना।

(4) छात्रों में मौखिक पठन द्वारा आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता विकसित करना।

मौखिक पठन के प्रकार

(1) व्यक्तिगत पठन—इसमें शिक्षक अथवा छात्र व्यक्तिगत रूप से पठन करता है।

(2) सामूहिक पठन—इसमें समस्त कक्षा एक साथ मिलकर समान स्वर, गति और लय से मौखिक पठन करते हैं।

कक्षा शिक्षण की दृष्टि से—(1) आदर्श पठन, (2) अनुपठन, (3) अनुकरण पठन।

1. आदर्श पठन—शिक्षक जो आदर्श पाठ छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करता है, वह आदर्श पठन कहलाता है। यह आदर्श पठन व्यक्तिगत होता है। यहाँ पर विशेष ध्यान देने की बात यह है कि हिन्दी गद्य-शिक्षण में आदर्श कथन किया जाता है और हिन्दी कविता-शिक्षण में आदर्श पाठ किया जाता है।

2. अनुपठन—हिन्दी-शिक्षण में अनुपठन का भी महत्व है। यह प्रारम्भिक कक्षाओं में उपयोगी होता है। पठन का अभ्यास कराने के लिए अनु पठन का आश्रय लिया जाता है। प्रारम्भिक स्तर पर छात्र हिन्दी को मौखिक रूप से पढ़ने में कठिनाई अनुभव करते हैं, जिसे अनु पठन द्वारा दूर किया जा सकता है। इसमें शिक्षक गद्यांश/पद्यांश के कुछ अंश का पहले पाठ करता है। तत्पश्चात् उतने ही अंश का छात्र सामूहिक रूप से सस्वर पाठ करते हैं।

3. अनुकरण पठन—छात्रों द्वारा व्यक्तिगत रूप से आदर्श पठन का अनुकरण करके किये गये पठन को अनुकरण पठन कहते हैं। हिन्दी गद्य-शिक्षण में छात्रों से अनुकरण कथन कराते हैं और हिन्दी कविता-शिक्षण में अनुकरण पाठ कराते हैं।

मौखिक पठन के दोष—महर्षि याज्ञवल्क्य ने मौखिक पठन के 14 दोषों का उल्लेख किया है—"**शंकित होकर पढ़ना, भयभीत होकर पढ़ना, चिल्लाकर पढ़ना, अस्पष्ट पढ़ना, अनुनासिक पढ़ना, कौवे की तरह कर्कश स्वर में पढ़ना, मूर्धा से पढ़ना, समुचित उच्चारण करके न पढ़ना, स्वरहीन पढ़ना, नीरस ढंग से पढ़ना, मिला-मिलाकर अस्पष्ट पढ़ना, विषम आरोह-अवरोह से पढ़ना, व्याकुलता से पढ़ना तथा तालुहीन की तरह पढ़ना।**"[1]

उपर्युक्त पठन दोषों के अतिरिक्त महर्षि पाणिनि[2] ने निम्नलिखित छः प्रकार से पठन करने वाले पाठकों को अधम कोटि का बताया है—

1. गा-गाकर पढ़ने वाला
2. अधिक शीघ्रता से पढ़ने वाला
3. पढ़ते समय सिर हिलाने वाला

---

1 "शंकित भीतिमृदुधुष्टमव्यक्तमनुनासिंकिम्।
काकस्वरं मूर्ध्नि गतं तथा स्थानविवर्जितम्।।
विस्वरं विरसं चैव विश्लिष्ट विषमाहतम्।
व्याकुलं तालुहीन च पाठ दोषाश्चतुर्दश।।"

याज्ञवल्क्य शिक्षा—34-35

2. "गीती शीघ्री शिरः कम्पी तथालिखितपाठकाः।
अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाधमाः।।"

पाणिनीय शिक्षा—32

Scanned with CamScanner

4. चुपचाप पढ़ने वाला
5. अर्थ को समझे बिना पढ़ने वाला
6. दबे स्वर में पढ़ने वाला।

मौखिक पठन के तत्व—मौखिक पठन के प्रमुख तत्व निम्नलिखित हैं—

श्रवण तीक्ष्णता

1. उचित आसन एवं मुद्रा—मौखिक पठन के लिए उचित आसन एवं मुद्रा का होना आवश्यक है। यदि बैठकर पढ़ना हो तो कुर्सी पर सीधा बैठना चाहिए ताकि रीढ़ की हड्डी सीधी रहे और पैर 90° का कोण बनाते हुए लटके रहें। खड़े होकर पठन में बिल्कुल सीधा खड़ा होना चाहिए। पुस्तक को बायें हाथ से पकड़ना चाहिए जो 45° का कोण बनाती हुई आँखों से एक फुट की दूरी पर हो। इससे पाठक को शीघ्र थकान नहीं आती है।

2. माधुर्य—मौखिक पठन में माधुर्य बहुत ही आवश्यक तत्व है। मधुरता के साथ किया गया मौखिक पठन सुनने वाले को प्रिय लगता है और प्रभावपूर्ण होता है।

3. वर्णों का स्पष्ट उच्चारण—मौखिक पठन में वर्णों का उच्चारण स्पष्ट होना चाहिए ताकि सुनने वाला शुद्ध-शुद्ध सुन सके।

4. समुचित पदच्छेद—मौखिक पठन करते समय पदच्छेद पर समुचित ध्यान देना चाहिए। लम्बे-लम्बे पदों को समुचित सन्धिविच्छेद एवं समास-विग्रह द्वारा अलग-अलग कर लेने से मौखिक पठन में सरलता होती है। एक पद बोलने के पश्चात् दूसरा पद बोलने से सभी पद स्पष्ट और पृथक्-पृथक् प्रतीत होते हैं।

5. समुचित स्वर—मौखिक पठन का प्रमुख तत्व स्वर भी है। अतः स्वर पर समुचित ध्यान देना चाहिए। समुचित आरोह-अवरोह के साथ पढ़ने से मौखिक पठन प्रभावपूर्ण हो जाता है।

6. धैर्य—मौखिक पठन में धैर्य भी विशेष महत्व रखता है। धैर्यपूर्वक किया गया मौखिक पठन प्रभावशाली होता है।

7. उचित लय—मौखिक पठन में समुचित लय होनी चाहिए। बिना उचित लय के किया गया मौखिक पठन कर्कश प्रतीत होता है।

महर्षि पाणिनि[1] ने अच्छे पाठकों के निम्नलिखित छः गुणों का उल्लेख किया है—

1. मधुरता से पढ़ना,
2. वर्णों का स्पष्ट उच्चारण करके पढ़ना,
3. पदों का समुचित विभाजन करके पढ़ना,
4. सुन्दर एवं शुद्ध स्वर के साथ उच्चारण करके पढ़ना,
5. धैर्य के साथ पढ़ना,
6. उचित लय के साथ पढ़ना।

मौखिक पठन—शिक्षण की विधियाँ (Methods of Teaching Reading)—मौखिक पठन-शिक्षण की विभिन्न विधियाँ प्रचलित हैं, जिनमें निम्नलिखित प्रमुख विधियाँ हैं—

1. वर्णमाला विधि,

---

1 "माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः।
धैर्यं लयसमर्थं च षडेते पाठकाः गुणाः।।" पाणिनीय शिक्षा—33

2. शब्द विधि,
3. वाक्य विधि।

वर्णमाला विधि—हिन्दी भाषा-शिक्षण में इस विधि का प्रयोग विशेष रूप से होता है। इस विधि में सर्वप्रथम वर्णमाला के स्वर तथा व्यंजन वर्णों का बाद में संयुक्ताक्षरों का ज्ञान छात्रों को कराया जाता है। वर्णों का समुचित ज्ञान हो जाने पर बालकों को शब्दों के पढ़ने का ज्ञान कराया जाता है तत्पश्चात् वाक्यों के पढ़ने का। इस प्रकार बालक पढ़ने में निपुण हो जाते हैं। शिक्षा-शब्दकोश में वर्णमाला विधि के अर्थ को इस प्रकार स्पष्ट किया गया है—**"वर्णमाला विधि पठन-शिक्षण की विधि है, जिसके द्वारा छात्र को प्रारम्भ में अक्षरों से तत्पश्चात् संयुक्त अक्षरों से और अन्त में शब्दों से परिचित कराया जाता है।"**[1]

वर्णमाला विधि के गुण—इस विधि के गुण निम्नलिखित हैं—

1. यह विधि वर्णों के ज्ञान एवं उनके उच्चारण शिक्षण के लिए उपयोगी है।
2. यह विधि समय की दृष्टि से मितव्ययी है।
3. यह विधि हिन्दी सिखाने के लिए अधिक श्रेयस्कर है क्योंकि हिन्दी वर्णमाला पूर्णतः वैज्ञानिक है। इसके वर्ण एवं ध्वनि एक ही है। इसमें कोई भी वर्ण निरर्थक नहीं है। वर्ण का नाम ध्वनि का प्रतीक है।
4. इस विधि में बालक क्रमानुसार पढ़ना सीखते हैं।

दोष—इस विधि के दोष निम्नलिखित हैं—

1. इस विधि से छात्र वर्ण सीखने में रुचि नहीं लेते हैं क्योंकि वर्ण स्वयं में निरर्थक होते हैं।
2. यह विधि नीरस है। इस विधि द्वारा शिक्षण में बालक कम रुचि लेते हैं।
3. मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि जितना समय वर्ण को पहचानने में लगता है उतना ही समय शब्दों को पहचानने में। अतः वर्णों का ज्ञान कराना व्यर्थ प्रतीत होता है।
4. वर्ण के समझने के उपरान्त शब्द सरल नहीं होता वरन् शब्द समझने के उपरान्त वर्ण को समझना सरल होता है। जैसा **प्रो. रामराजा** ने लिखा है—"यह धारणा बड़ी भ्रामक है कि बालक वर्ण को सरलता से समझ लेगा और वर्ण को समझने के पश्चात् शब्द समझना सरल होगा।"

शब्द विधि—यह विधि सर्वप्रथम योरोप में कामेनियस द्वारा 1648 ई. में अपनी पुस्तक The Orbis Pictus में प्रतिपादित की गई थी और 1846 ई. में संयुक्त राज्य अमेरिका में रसेल वेब द्वारा प्रस्तावित हुई थी। यह पठन शिक्षण की विधि है, जो सम्पूर्ण शब्द से प्रारम्भ होती है, परन्तु इसमें ध्वनियों पर विशेष बल दिया जाता है। इस विधि में बालकों को सर्वप्रथम वर्णों के स्थान पर शब्दों का ज्ञान कराया जाता है। बालक को शब्दों का पठन पहले सिखाया जाता है। शब्द पठन में कुशल हो जाने पर छात्रों को वाक्य पढ़ना सिखाया जाता है, अन्त में वर्णों के उच्चारण। हिन्दी भाषा-शिक्षण में यह विधि सबसे अधिक उपयोगी है। देखो और कहो विधि, ध्वनि साम्य विधि, अनुध्वनि विधि तथा साहचर्य विधि आदि शब्द विधि की ही प्रकार मात्र हैं। शब्द विधि के अर्थ को स्पष्ट करते हुए शिक्षा-शब्दकोश में लिखा है—**"शब्द विधि पठन शिक्षण की विधि है, जिसमें प्रथमतः शब्दों को पूर्ण रूप में प्रस्तुत किया जाता है और बाद में खण्डों में विश्लेषित किया जाता है।"**[2]

---

1 "Alphabetic method is a method of teaching reading by acquainting the learner first with letters than with combinations and finally with words."
—*Dictionary of Education* p. I.

2 "Word method is a method of teaching reading in which the words are first presented as whole and later analyzed into part."
—*Dictionary of Education* p. 650.

Scanned with CamScanner

गुण—इस विधि के गुण निम्नलिखित हैं—

1. शब्द आँखों को शीघ्र दिखलायी पड़ते हैं। इससे शब्द बालक को वर्ण की अपेक्षा अधिक प्रभावित करते हैं। इससे बालक पठन में शीघ्र कुशल हो जाते हैं।

2. अर्थ की दृष्टि से शब्द भाषा की इकाई है। शब्दों के कुछ अर्थ होते हैं। अतः बालक शब्दों को सरलता से सीख लेते हैं और उनके पठन में भी रुचि लेते हैं।

3. शब्द विधि में शब्द की समष्टि एवं ध्वनि का उसके सामूहिक वर्णात्मक स्वरूप से तादात्म्य रहता है और इसका बोध उसी प्रकार हो जाता है, जैसे किसी पदार्थ को देखने मात्र से होता है न कि उसके अवयवों को देखने से।

दोष—इस विधि के दोष निम्नलिखित हैं—

1. इस विधि में बालकों को केवल उन्हीं शब्दों का ज्ञान कराया जा सकता है जो उनके ज्ञान एवं अनुभव की सीमा के अन्दर हैं। इसका चयन शिक्षकों के लिए दुष्कर कार्य प्रतीत होता है।

2. इस विधि में शिक्षक को अधिक कार्य करना पड़ता है।

वाक्य विधि—सन् 1885 में फर्नहम[1] ने पठन शिक्षण के लिए वाक्य विधि को अपनाने का सुझाव दिया था। उसका मत था कि भाषा की वास्तविक इकाई वाक्य है, न कि शब्द अथवा वर्ण। इस विधि में सर्वप्रथम बालकों को वाक्य पढ़ना सिखाया जाता है क्योंकि वाक्य ही पूर्ण अर्थ दे सकता है। महर्षि पतंजलि ने पूर्ण अर्थ की प्रतीति कराने वाले शब्द समूह को ही वाक्य माना है। अतः पूर्ण अर्थ प्राप्त होने के कारण बालक वाक्यों को ही पढ़ने में विशेष रुचि लेते हैं। इस विधि में बालकों को पहले वाक्य का पढ़ना फिर शब्दों का और अन्त में वर्णों का उच्चारण करना सिखाया जाता है। समवेत पाठ विधि, भाषा-शिक्षण-यन्त्र विधि वाक्य विधि की ही प्रकार मात्र है। शिक्षा-शब्दकोश में वाक्य विधि के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं—**"वाक्य विधि पठन-शिक्षण की विधि है, जिसमें शब्द, वाक्यांश अथवा अक्षर (वर्ण) के स्थान पर पूर्ण वाक्य को इकाई के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।"**[2]

गुण—इस विधि के गुण निम्नलिखित हैं—

1. समय की दृष्टि से यह विधि मितव्ययी है। इसमें छात्र कम समय में अधिक सीखते हैं।

2. इसमें विशिष्ट से सामान्य की ओर बढ़ते हैं।

दोष—इस विधि के दोष निम्नलिखित हैं—

1. यह विधि निम्न स्तर के बालकों के लिये अनुपयोगी है।

2. इसमें त्रुटियों की अधिक सम्भावना रहती है।

3. शब्दों एवं वर्णों का ज्ञान न होने के कारण वाक्य के पठन में बालकों का समय अधिक नष्ट होता है।

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि तीनों ही विधियाँ अपने में परिपूर्ण नहीं हैं। वर्णमाला विधि में वर्णों के पठन से प्रारम्भ किया जाता है, फिर शब्द और अन्त में वाक्य पठन सिखाया जाता है। वाक्य विधि में सबसे पहले वाक्य, फिर शब्द और अन्त में वर्ण। इस प्रकार हम देखते हैं कि शब्द विधि का दोनों में प्रयोग हुआ है। अतः शब्द विधि को ही मौखिक पठन शिक्षण में प्रयोग करना चाहिए तथा वर्णमाला एवं वाक्य विधि को शब्द विधि की पूरक के रूप में यथा स्थान प्रयोग करना चाहिए।

---

1 Dictionary of Education. p. 649.

2 "Sentence method is a method of teaching reading in which the whole sentence, instead of a word, phrase or letter is presented as a unit." —*Dictionary of Education*. p. 528.

Scanned with CamScanner

मौखिक पठन से लाभ—मौखिक पठन से निम्नलिखित लाभ हैं—

1. मौखिक पठन से छात्र की दृश्येन्द्रियाँ, ध्वनि-यन्त्र और मस्तिष्क तीनों ही प्रशिक्षित हो जाते हैं, जिससे छात्र हिन्दी-ध्वनियों एवं लिपि-संकेतों को सरलता से समझ लेते हैं और वे उनका सम्यक् उच्चारण करने में समर्थ हो जाते हैं।

2. इससे छात्रों की वर्तनी एवं उच्चारण में शुद्धता आती है।

3. इससे छात्र नवीन शब्दों, सूक्तियों, मुहावरों एवं लोकोक्तियों से परिचय प्राप्त करते हैं। अतः उनके शब्द-भण्डार में नवीन शब्दों, सूक्तियों, मुहावरों एवं लोकोक्तियों की वृद्धि होती है।

4. इससे छात्रों की लज्जा, झिझक एवं हिचकिचाहट समाप्त हो जाती है, परिणामस्वरूप उनके पठन में शुद्धता एवं धारा-प्रवाहिता आ जाती है।

5. इससे छात्रों में आत्मविश्वास बढ़ता है और वे पठन कौशल से प्रवीणता प्राप्त करने के लिए प्रयास करने लगते हैं।

6. मौखिक पठन से उच्चारण, सन्धियोग और प्रतिपादन में शुद्धता एवं स्पष्टता आ जाती है।

7. मौखिक पठन में छात्रों को स्वराघात और बलाघात का भी समुचित ज्ञान हो जाता है।

8. इससे छात्र लेखक द्वारा प्रयुक्त विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग करना सीख जाते हैं।

9. मौखिक पठन छात्रों की पठन में शुद्धता एवं धारा-प्रवाहिता के परीक्षण में सहायक होता है।

10. यह शुद्ध उच्चारण, अभिव्यक्ति, अर्थ निर्णय, लय और लचीलेपन में दक्षता प्रदान करता है।

11. मौखिक पठन में पाठक को व्यक्तिगत लाभ तो होता ही है, साथ ही वह दूसरों को भी लाभान्वित करता है और वह उन्हें अर्थ-निर्णय या व्याख्या के लिए भी आमन्त्रित करता है।

मौखिक पठन की सीमायें—मौखिक पठन की निम्नलिखित सीमायें हैं—

1. यह मितव्ययी नहीं है क्योंकि इसमें समय अधिक लगता है। मौखिक पठन का अभ्यास करने वाले छात्रों को अधिक सावधानी बरतनी पड़ती है।

2. मौखिक पठन में सामान्यतया अधिक स्थिरता, अधिक प्रतिगमन और लम्बे विराम होते हैं।

3. मौखिक पठन सामान्यतया मौन पठन की तुलना में धीमी गति वाला होता है।

4. इससे अन्य छात्रों की स्वतन्त्रता भंग होती है तथा उनके कार्य में बाधा पड़ती है। अतः प्रत्येक परिस्थिति में मौखिक पठन सम्भव नहीं है।

5. मौखिक पठन में वाणी, लय, गति और भाव-भंगिमा पर भी विशेष ध्यान देना पड़ता है।

मौखिक पठन को प्रभावपूर्ण बनाने हेतु सुझाव—

1. मौखिक पठन के समय कक्षा में बिल्कुल सीधे खड़े होना चाहिए और पाठ्य-पुस्तक को बायें हाथ में इस प्रकार पकड़ना चाहिए कि वह कम से कम एक फुट की दूरी पर 45° का कोण बनाती हुई हो।

2. यदि बैठकर मौखिक पठन करना हो तो कुर्सी पर बिल्कुल सीधे बैठना चाहिए और पैरों को समकोण की स्थिति में लटकाना चाहिए।

3. मौखिक पठन के अवसर पर भावानुसार समुचित भाव-भंगिमा भी प्रकट की जानी चाहिए। प्रतिमूर्ति सदृश खड़े होकर नहीं पढ़ना चाहिए। पठन की गति पर भी समुचित ध्यान रखना चाहिए।

4. मौखिक पठन में पठन के दोषों से बचना चाहिए।

5. मौखिक पठन के गुणों पर आधारित होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

6. छात्रों को पहले कठिन पदों का उच्चारणाभ्यास करा देना चाहिए। तदुपरान्त अनुकरण वाचन/पाठ कराना चाहिए।

7. शुद्ध उच्चारण करने वाले छात्रों से पहले मौखिक पठन कराना चाहिए उसके बाद अन्य छात्रों से।

8. शुद्धोच्चारण युक्त मौखिक पठन की प्रशंसा करनी चाहिए।

9. मौखिक पठन के समय कक्षा के अन्य छात्रों को पाठ्य-पुस्तकों में पठित अंश के अवलोकन हेतु शिक्षक को पहले निर्देश दे देना चाहिए।

10. मौखिक पठन में छात्र जब अशुद्धियाँ करे, तो उसे रोककर अशुद्धि का संशोधन छात्र द्वारा या स्वयं शिक्षक को करना चाहिए। तत्पश्चात् छात्र द्वारा शब्द को शुद्ध रूप से दोहरा देने के उपरान्त ही उसे आगे पढ़ने को कहना चाहिए। इस क्रिया में अधिक समय नहीं लगाना चाहिए।

सस्वर वाचन
(LOUD READING)

सस्वर वाचन का जीवन में महत्व

सस्वर वाचन का हमारे जीवन में बड़ा महत्व है। जीवन में पग-पग पर ऐसे अवसर आते हैं, जबकि हमें सस्वर वाचन की आवश्यकता पड़ती हैं। आज का बालक ही कल का सभ्य नागरिक बनेगा और एक जागरूक राष्ट्र के नागरिक के जो-जो उत्तरदायित्व हैं, उन्हें उसे पूरा करना होगा। उसे सभा-सोसाइटी आदि में जाना होगा, अभिभाषण देना होगा, अभिनन्दन-पत्र तथा घोषणाएँ आदि पढ़नी होंगी। इन सभी दृष्टियों से वह तभी सफल हो सकेगा, जबकि उसे सस्वर-वाचन का अच्छा अभ्यास होगा।

सस्वर वाचन की विशेषताएँ

सस्वर वाचन की विशेषताओं पर प्रकाश डालने से पूर्व, हमें सबसे पहले यह देखना होगा कि सस्वर वाचन से हमारा तात्पर्य क्या है ? "यह राम है", "यह सीता है", "काशी भारत की प्राचीन नगरी है"—क्या वाक्यों का ठीक-ठीक उच्चारण कर देना मात्र ही वाचन है ? हम प्रतिदिन बालकों से वाचन करवाते हैं, परन्तु कभी भी यह सोचने का कष्ट नहीं करते कि वाचन आखिर है क्या ? मान लीजिए हम यह जानना चाहते हैं कि नीरज और ममता नाम के दो बालक वाचन कर सकते हैं या नहीं। इसके लिए हम क्या करेंगे ? प्रायः यही किया जाता है कि बालकों के हाथ में कोई पुस्तक दे देना और उन्हें पढ़ने के लिए कहना। परन्तु क्या इतने से ही हम जान जाएँगे कि बालक ठीक प्रकार से वाचन कर सकते हैं ? इसी बात को हम एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे। मान लीजिए, बालकों को आगे लिखा अवतरण पढ़ने के लिए दिया गया—

"पहाड़ी पर बर्फ गिर रही थी। वहाँ पर एक लम्बा-सा आदमी काले रंग का कोट पहने थे। उसकी कमीज में कालर नहीं था। उसके सिर पर लाल रंग की पगड़ी बँधी हुई थी। वह अपनी चमकीली आँखों से मेरी ओर देख रहा था।"

जब दोनों बालक इस अवतरण को पढ़ लेंगे, तो हमारे मन में नीचे लिखे प्रश्न उठेंगे—

1. क्या दोनों बालक, इन शब्दों और इनकी ध्वनियों को पहचानते हैं ?
2. इस अवतरण के शब्दों को पढ़ते समय, क्या वे इनके अर्थों को भी जानते थे ?
3. क्या बालकों ने मनोरंजक ढंग से पढ़ा है ?

Scanned with CamScanner

4. क्या उन्होंने पढ़ते समय उचित विराम आदि लिया है ?
5. क्या उन्होंने शब्दों का उच्चारण स्पष्ट रूप से किया है ?
6. क्या वे पढ़ते समय पाठ में रुचि ले रहे थे ?

हम और भी कई प्रकार के प्रश्न कर सकते हैं; जैसे—

1. क्या वह गर्म दिन था ?
2. क्या उस आदमी की पीठ मेरी ओर थी ?
3. क्या उसका सिर नंगा था ? इत्यादि-इत्यादि।

परन्तु पहले छः प्रश्नों के उत्तर पर ही यह निर्भर करेगा कि नीरज और ममता नाम के दोनों बालक कहाँ तक ठीक-ठीक वाचन कर सकते हैं। गैग के मतानुसार—"शब्दों का ठीक-ठीक उच्चारण कर सकने की क्षमता", यह तो वाचन की बहुत-सी विशेषताओं में से केवल एक ही विशेषता है।[1]

बालक ठीक प्रकार से वाचन कर सकते हैं या नहीं, यह जानने के लिए केवल शब्दों के ठीक उच्चारण को ही महत्व न देकर वाचन की अन्य विशेषताओं को भी ध्यान में रखना होगा।

सस्वर वाचन की अन्य विशेषताएँ

(1) शब्दों की ध्वनियों का ज्ञान (Sounds of the Words)—यह वाचन का बड़ा महत्वपूर्ण अंग है। अभी तक केवल इसी के आधार पर ही यह निर्णय किया जाता था कि बालक वाचन क्रिया में कहाँ तक निपुण है, परन्तु केवल इसी आधार पर हम वाचन सम्बन्धी पूरी-पूरी जानकारी प्राप्त नहीं कर सकते।

(2) शब्दों का अर्थ (Meaning of the Words)—जहाँ बालकों के लिए यह आवश्यक है कि वे शब्दों का ठीक-ठीक उच्चारण जानें वहाँ यह भी आवश्यक है कि शब्दों को पढ़ाते समय उन्हें अर्थ की प्रतीति भी होती जाये। जब तक बालक ठीक-ठीक रूप से अर्थों को ग्रहण नहीं करेंगे, तब तक वे पाठ में रुचि नहीं लेंगे।

(3) वाचन का ढंग (Way of Expression)—वाचन के सम्बन्ध में तीसरा प्रश्न यह किया गया था कि—"क्या बालकों ने मनोरंजक ढंग से पढ़ा है ?" मनोरंजकता से हमारा तात्पर्य है कि बालक के वाचन में विविधता होनी चाहिए। वीरता से युक्त उक्तियों, करुण रस से ओत-प्रोत स्थल तथा साधारण वर्णनात्मक पाठ—इन सब के वाचन में कुछ-न-कुछ अन्तर अवश्य रहेगा।

(4) विराम चिन्ह (Punctuation)—किसी भाषा के वाचन में विराम-चिन्हों का बड़ा महत्व है। वे प्रकट करते हैं कि वाचन के समय बालकों को कहाँ-कहाँ पर विराम लेना है। विराम-चिन्हों द्वारा पाठ के समझने में बड़ी सहायता मिलती है। इसलिए बालकों को इस बात का प्रोत्साहन देना होगा कि वे वाचन करते समय ऐसे स्थलों पर उचित विराम लेते चलें।

(5) स्पष्टता (Clarity)—ऊपर बताया है कि वाचन में विविध्ता होनी चाहिए, परन्तु यदि वाचन में स्पष्टता नहीं होगी, तो इस विविधता से कोई लाभ नहीं। इसलिए यह प्रयास करना होगा कि बालक जो कुछ भी पढ़ें, स्पष्ट रीति से पढ़ें। उनके उदाहरण में अस्पष्टता का लेश-मात्र भी नहीं होना चाहिए।

(6) रुचि (Interest)—वाचन के सम्बन्ध में हमारा अन्तिम प्रश्न बालकों की रुचि से सम्बन्धित था। यदि बालकों की वाचन में रुचि नहीं होगी, यदि उन्हें पढ़ने में आनन्द नहीं आएगा तो वे पढ़ने से दूर भागेंगे। इसलिए इस बात पर विशेष रूप से ध्यान देना होगा कि बालकों को वही कुछ पढ़ने के लिए दिया जाय जो कि उन्हें अच्छा लगे।

---

1 **Gagg & Gagg :** *"Teaching Children to Read"*. p. 10.

उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट हो गया होगा कि वाचन से हमारा क्या तात्पर्य है और वे कौन-कौन-सी बातें हैं, जिनके आधार पर हम कह सकते हैं कि बालक पढ़ना जानते हैं, अथवा नहीं।

मौन पठन (Silent Reading)—जब लिखित भाषा में व्यक्त भावों एवं विचारों को समझने के लिए ध्वन्यात्मक उच्चारण किए बिना पढ़ा जाता है तो वह मौन पठन/वाचन कहलाता है। मौन पठन के अर्थ को स्पष्ट करते हुए **शिक्षा शब्दकोष** में लिखा है—"मौन पठन श्रवणीय शब्दोच्चारण के बिना किया गया पठन है।"

मौन पठन का महत्व—हिन्दी-शिक्षण में मौन पठन का अपना विशेष महत्व है। मौखिक पठन का अभ्यास हो जाने पर बालक स्वतः मौन पठन में रुचि लेने लगता है। इस सम्बन्ध में **जड़** (Judd) ने लिखा है—"शिक्षकों को यह भली-भाँति समझ लेना चाहिए कि उच्च कक्षाओं में पठन की सबसे अच्छी विधि मौन वाचन ही है। जब कोई बालक चलना सीख लेता है तो वह खिसकना छोड़ देता है। इसी प्रकार जब वह मौनवाचन में सफलता प्राप्त कर लेता है, तो वह सस्वर पठन की आदत छोड़ देता है।" मौन पठन इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि मौखिक पठन में समय अधिक लगता है। प्रत्येक अवसर पर मौखिक पठन नहीं किया जा सकता है। मौखिक पठन से अन्य छात्रों की स्वतन्त्रता भंग होती है और उनके कार्यों में बाधा पड़ती है। इस प्रकार मौन पठन अधिक व्यावहारिक एवं उपयोगी है।

मौन पठन के उद्देश्य—1. छात्रों को पाठ्यवस्तु को शीघ्रता से पढ़ने के सुयोग्य बनाना।

2. पठित अंश में निहित भावों एवं विचारों को आत्मसात् करने की योग्यता प्रदान करना।

3. छात्रों के शब्द, मुहावरा एवं लोकोक्ति भण्डार में वृद्धि करना।

4. छात्रों को पठित अंश के केन्द्रीय भावको ग्रहण करने के सुयोग्य बनाना।

5. छात्रों को स्वाध्याय के लिए प्रोत्साहित करना।

6. स्वस्थ मनोरंजन एवं आनन्दानुभूति के साथ-साथ छात्रों का बौद्धिक विकास करना।

7. छात्रों को हिन्दीतर विषयों को द्रुतगति से पढ़ने एवं उसे आत्मसात कर सकने के सुयोग्य बनाना।

8. छात्रों की हिन्दी-साहित्य के अध्ययन में रुचि उत्पन्न करना।

मौन पठन के तत्व—मौन पठन के प्रमुख तत्व निम्नलिखित हैं—

1. उचित आसन एवं मुद्रा—मौन पठन के लिए उचित आसन एवं मुद्रा विशेष आवश्यक है। मौन पठन करते समय पाठक को सीधा बैठना चाहिए, जिससे उसकी रीढ़ की हड्डी सीधी बनी रहे और पैर 90° का कोण बनाते हुए लटके रहने चाहिए। पाठ्य-पुस्तक एक फुट की दूरी पर रहनी चाहिए। मौन पठन में पाठक को मुँह बन्द रखना चाहिए उसके होंठ नहीं हिलने चाहिए। ऐसा न होने से पाठक को शीघ्र थकान आ जाती है और वह मौन पठन में ऊबने लगता है।

2. परिचित शब्दावली—मौन पठन में कौशल प्राप्त करने के लिए परिचित शब्दावली का होना आवश्यक है। इससे छात्रों को मौन पठन में सरलता रहती है और विषयवस्तु को आत्मसात् करने में कठिनाई नहीं होती है।

3. एकाग्रता—मौन पठन के लिए छात्रों में एकाग्रता का होना आवश्यक है। बिना एकाग्रता के मौन पठन में छात्रों का ध्यान विषयवस्तु पर अधिक समय तक केन्द्रित नहीं रह पाता है। अतः एकाग्र एवं शान्तचित्त होकर मौन पठन से किसी भाव या विचार को सरलता से हृदयंगम किया जा सकता है।

4. धैर्य—मौन पठन में छात्रों से धैर्य धारण करने की अपेक्षा रहती है क्योंकि मौन पठन नीरस होता है तथा लाभ भी प्रत्यक्ष प्रतीत नहीं होता है। अतः दुर्बोध भाव या विचार आ जाने पर छात्र घबड़ा जाते हैं, धैर्य छोड़ देते हैं और अर्थ-बोध हेतु प्रयास नहीं करते हैं।

Scanned with CamScanner

5. अर्थ-बोध—मौन पठन में अर्थ-बोध का भी महत्व है। बिना अर्थ-बोध के मौन पठन निरर्थक होता है। अतः सामान्य गति से मौन पठन करते हुए अर्थ-बोध हेतु प्रयास करना चाहिए।

6. शान्त वातावरण—मौन पठन के लिए कक्षा या स्थल का वातावरण पूर्ण शान्त होना चाहिए। शान्त वातावरण में छात्रों का ध्यान विषयवस्तु पर केन्द्रित बना रहता है। उनके पठन में कोई बाधा नहीं पड़ती है। इससे वे अधिक समय तक मौन पठन कर सकते हैं।

मौन पठन के प्रकार (Types of Silent Reading)—उद्देश्य के आधार पर मौन पठन के दो प्रकार हैं—

1. गहन पठन (Intensive)
2. विस्तृत पठन (Extensive) या द्रुत पठन (Rapid Reading)

गहन पठन

गहन पठन का अर्थ—गहन पठन का शाब्दिक अर्थ है—गहनता से पढ़ना। पाठ्य-सामग्री का एक निश्चित/सीमित मात्रा में पठन गहन पठन कहलाता है। शिक्षा-शब्दकोश में गहन पठन के विषय में लिखा है—"गहन पठन अभिव्यक्ति की प्रक्रिया, अर्थ, व्याकरण का विशद् विवरण आदि के लिए ध्यान युक्त सचेत पठन है।"[1] इसमें छात्र वर्णों, शब्दों एवं वाक्यों तक ही अलग ध्यान केन्द्रित नहीं करते हैं वरन् पठित समग्र सामग्री का समीक्षात्मक पठन करते हैं। इसलिए इसे समीक्षात्मक पठन भी कहा जाता है। इस प्रकार गहन पठन छात्रों में लिखित अथवा मुद्रित सामग्री को शुद्धता से पढ़ने एवं पूर्ण अवबोध के कौशल का विकास करने से सम्बन्धित है।

गहन पठन की प्रक्रिया—इसमें हिन्दी-शिक्षक सर्वप्रथम कक्षास्तर के अनुरूप सहायक पुस्तक अथवा पाठ्य-पुस्तक से गहन पठन हेतु पाठ्य सामग्री का चयन करता है। गहन पठन हेतु प्रस्तावित गद्य पाठ/खण्ड अधिक विस्तृत नहीं होना चाहिए। प्रारम्भ में एक पृष्ठ ही गहन पठन के लिए पर्याप्त होता है। छोटे पाठ में निहित विचार को समझना सरल होता है। यदि पाठ बड़ा हो, तो उसे अर्थपूर्ण एवं स्वतःपूर्ण अन्वितियों में विभक्त कर लेना चाहिए। प्रस्तावित पाठ का कक्षा में पठन कराने के उपरान्त शिक्षक छात्रों को पठित पाठ्य-सामग्री से सम्बन्धित प्रश्न देता है, जिनके उत्तर छात्र घर पर पाठ्य सामग्री को पुनः पढ़कर लिखते हैं। दूसरे दिन कक्षा में शिक्षक उन पर छात्रों से चर्चा करता है। इससे छात्र पाठ्य सामग्री को दत्तचित्त होकर पढ़ते हैं और उसका अर्थग्रहण करने का प्रयास करते हैं।

विस्तृत पठन

विस्तृत पठन का अर्थ—विस्तृत पठन का शाब्दिक अर्थ है—विस्तृत रूप से पढ़ना। विषयवस्तु को आत्मसात् करते हुए तेजगति से अधिक पाठ्य सामग्री/पृष्ठों को व्याप्त करके पठन/वाचन करना विस्तृत पठन कहलाता है। विस्तृत पठन में छात्रों के पठन की गति अधिक तेज होती है। इसीलिए इसे द्रुत पठन (रेपिड रीडिंग) भी कहते हैं। शिक्षा-शब्दकोश में विस्तृत पठन के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है—"विस्तृत वाचन अभिव्यक्ति की प्रक्रिया अथवा विशद् विवरण की अपेक्षा मुख्य विचार के लिए द्रुत पठन/वाचन है।"[2]

विस्तृत पठन की प्रक्रिया—इसमें हिन्दी-शिक्षक सर्वप्रथम सहायक पुस्तक अथवा पाठ्य-पुस्तक से प्रमुख व्यक्तियों की आत्मकथाओं/जीवनियों, रोचक एवं शिक्षाप्रद कक्षा/कहानियों/गाथाओं, नाटक,

---

1. "Intensive Reading is a careful reading with attention to details of grammar, meaning, mechanics of expression etc."
—*Dictionary of Education*, p. 474.
2. "Extensive Reading is rapid reading for main thought rather than for detail or mechanics of expression."
—*Dictionary of Education*. p. 474.

Scanned with CamScanner

एकांकी, वार्तालाप, विवरणात्मक एवं वर्णनात्मक लेख आदि से विस्तृत पठन/वाचन हेतु का चयन करता है। चयनित पाठ के कठिन शब्दों एवं वाक्यांशों के अर्थ स्पष्ट कर देता है। तदुपरान्त छात्रों को प्रस्तावित पाठ का विस्तृत/द्रुत पठन/वाचन करने का निर्देश देता है। छात्र शिक्षक की सहायता के बिना विस्तृत मौन पठन करते हैं। वाचन/पठन की समाप्ति पर शिक्षक छात्रों से पठित विषयवस्तु पर प्रश्न पूछता है। इससे यह जाँच हो जाती है कि छात्रों ने पाठ्य सामग्री का दत्तचित्त होकर विस्तृत/द्रुत पठन/वाचन किया है और पाठ्य सामग्री का मुख्य विचार समझ लिया है।

मौन पठन से लाभ—मौन पठन से निम्नलिखित लाभ हो सकते हैं—

1. मौन पठन द्वारा शीघ्रता से तथा अधिक पढ़ा जा सकता है। इसमें छात्र पढ़ने के साथ-साथ भावों एवं विचारों को आत्मसात् करते जाते हैं।

2. इसमें छात्र कम समय में अधिक जानकारी प्राप्त कर लेते हैं क्योंकि इसमें छात्रों का ध्यान विषयवस्तु पर ही केन्द्रित रहता है। इससे वे विषयवस्तु को दत्तचित्त होकर समझने का प्रयास करते हैं।

3. मौन पठन द्वारा शान्त चित्त होकर किसी भाव या विचार का सरलता से हृदयंगम किया जा सकता है। इससे छात्रों में आत्मविश्वास बढ़ता है।

4. इससे छात्रों में स्वावलम्बन एवं स्वाध्याय की प्रवृत्ति विकसित होती है।

5. इसमें छात्रों को शारीरिक थकान नहीं होती है क्योंकि मौन-पठन में छात्रों की आँखें एवं मस्तिष्क ही कार्य करते हैं।

6. इसमें मानसिक शक्ति व्यय होने के कारण छात्रों को देर से थकान की अनुभूति होती है। परिणामस्वरूप छात्र अधिक समय तक पढ़ सकते हैं।

7. मौन पठन द्वारा अधिकांश पाठक अपने अवकाश के क्षणों का सदुपयोग करते हैं।

8. यह मितव्ययी भी है क्योंकि इसमें समय एवं शक्ति कम व्यय होती है। **ब्राइन** के अनुसार—"मौन पठन निःसन्देह अधिक मितव्ययी विधि है और यह हमारे जीवन की सामान्य क्रियाओं के लिए सबसे उत्तम है क्योंकि हमारा अधिकांश पठन मौन पठन में ही होता है।"[1]

मौन पठन की सीमायें—मौन पठन में उपर्युक्त गुण होते हुए भी निम्नलिखित सीमायें हैं—

1. प्रारम्भिक स्तर पर इसका उपयोग लाभप्रद नहीं है क्योंकि छात्र ध्वनियों के उच्चारण आदि से समुचित रूप से परिचित नहीं हो पाते हैं। अतः इस स्तर पर मौन पठन की अपेक्षा सस्वर पठन पर अधिक बल दिया जाता है।

2. छात्रों में शब्द-भण्डार एवं सूक्ति-भण्डार सीमित होने पर वे मौन पठन में विषयवस्तु को आत्मसात् करने में असमर्थ रहते हैं।

3. इसमें छात्रों को उच्चारण अभ्यास हेतु अवसर नहीं मिलता है।

4. मौन पठन में छात्रों के पठन की शुद्धता का मूल्यांकन भी सम्भव नहीं है।

5. हिन्दी भाषा में शब्द बहुधा सन्धि युक्त एवं समास युक्त होते हैं। अतः कठिन पदों के पठन में छात्रों को जो कठिनाई होती है, इसके निदान हेतु मौन पठन में कोई विकल्प नहीं है।

6. मौन पठन केवल अर्थ को आत्मसात् करने की योग्यता तक ही सीमित है। इसमें पठन शिक्षण कौशल के अन्य पक्ष उपेक्षित रह जाते हैं।

7. मौन पठन में केवल पाठक ही लाभान्वित होता है, अन्य को इससे कोई लाभ नहीं होता है।

---

1. "Silent Reading is undoubtedly the more economical, Besides being the method best adapted to the ordinary activities of your life since the vast majority of our reading is silent." —*J.A.O. Brien. Silent Reading* p. 30.

मौन पठन को प्रभावपूर्ण बनाने हेतु सुझाव—1. प्रारम्भिक स्तर पर मौन पठन के स्थान पर मौखिक पठन (सस्वर) अधिक लाभदायक है। इसके बाद ही मौन पठन कराना चाहिए।

2. मौन पठन से पूर्व छात्रों को पठन हेतु पाठ्यवस्तु का ज्ञान करा देना चाहिए।

3. मौन पठन से पूर्व छात्रों को निम्नलिखित निर्देश दे देना चाहिए—

(अ) पाठ को शान्तपूर्वक एवं एकाग्रचित्त होकर पढ़िए।

(ब) मुँह से आवाज नहीं निकलनी चाहिए।

4. मौन पठन का अभ्यास हो जाने पर छात्रों के ओष्ठ हिलने की क्रिया भी बन्द करा देनी चाहिए।

5. छात्रों को मौन वाचन का नियमित अभ्यास कराना चाहिए।

6. काठिन्य-निवारण या विस्तृत-व्याख्या के पश्चात् ही मौन पठन कराना चाहिए।

7. छात्रों के मौन पठन के समय शिक्षक को कक्षा का निरीक्षण करना चाहिए और यह देखना चाहिए कि सभी छात्र पढ़ रहे हैं या नहीं।

8. छात्रों को मौन वाचन का अभ्यास नियमित रूप से कराना चाहिए।

9. मौन पठन में तीन या चार मिनट से अधिक समय नहीं देना चाहिए।

10. मौन पठन के पश्चात् कतिपय प्रश्न अवश्य पूछे जाने चाहिए। इससे छात्र ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे और पाठ्यवस्तु को समझने का प्रयास करेंगे।

अभ्यास प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पठन कौशल से आप क्या समझते हैं ? मौखिक पठन के तत्वों का वर्णन कीजिए।
2. मौखिक पठन शिक्षण की विधियाँ पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. मौखिक कार्य से क्या तात्पर्य है ?
2. मौन पठन के अर्थ को स्पष्ट कीजिए।
3. सस्वर वाचन का महत्व बताइए।
4. मौखिक पठन को किस प्रकार प्रभावपूर्ण बनाया जा सकता है ?
5. गहन पठन की प्रक्रिया बताइए।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. वर्णमाला विधि में सर्वप्रथम बालक को किसका ज्ञान कराया जाता है ?

(अ) स्वर व्यंजन　　(ब) संयुक्त व्यंजन

(स) शब्द　　(द) वाक्य।

2. शब्द विधि के प्रवर्तक कौन थे ?

(अ) फ्रोबेल　　(ब) मॉण्टेसरी

(स) कामेनियस　　(द) थर्सटन।

3. "वाक्य विधि पठन शिक्षण की विधि है जिसमें शब्द, वाक्यांश अथवा अक्षर (वर्ण) के स्थान पर पूर्ण वाक्य को इकाई के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।" नामक कथन किसके द्वारा दिया गया है ?

(अ) फर्नहम (ब) रूसो

(स) कामेनियस (द) शिक्षा शब्दकोश।

4. गहन पठन को..................भी कहा जाता है।

(अ) समीक्षात्मक पठन (ब) द्रुत पठन

(स) मौन पठन (द) सस्वर वाचन।

5. सन् 1885 में.......................... ने पठन शिक्षण के लिए वाक्य विधि को अपनाने का सुझाव दिया।

(अ) सुकरात (ब) जॉन डीवी

(स) फ्रोबेल (द) फर्नहम।

उत्तर—1. (अ) स्वर-व्यंजन, 2. (स) कामेनियस, 3. (द) शिक्षा शब्दकोश, 4. (अ) समीक्षात्मक पठन, 5. (द) फर्नहम। ❑